CHAR DHAM, UTTARAKHAND

Religion has always been a cardinal influence on the belief system and way of life of people across the world. A Pilgrimage is a journey undertaken in the light of this intense faith. People walk miles to fulfil their devotional urge. The word *Dham* literally means an abode where God resides. The Char Dham Yatra in Uttarakhand consists of four holy sites namely Yamunotri, Gangotri, Kedarnath and Badrinath. According to the Hindu tradition, each individual must undertake this holy pilgrimage in order to find salvation and peace after death.

Yamunotri, as the name itself suggests is derived from one of the most holy rivers of India, the Yamuna. Being the first point amongst the four dhams, it is believed that taking a holy dip in Yamunotri rids the devotees of their sins, washes away the evil deeds. Besides this, there is a temple of historic significance which was built by the king of Tehri in the year 1839. It houses the idol of Goddess Yamuna in the form of black marble idol and also of Ganga Devi in white stone by the side of Yamuna. One of the astonishing characteristics of the place that attracts the pilgrims is the hot water springs found near the temple. The spring is called *Surya Kund;* devotees boil potatoes and rice in the hot boiling water, which is later accepted as *Prasad of Devi.*

Gangotri Dham was built in the reverence of Goddess Ganga, considered to be an epitome of forbearance and sacrifice as she absolved herself into the mother Earth to protect humanity from destruction. The temple stands amidst the serenity of exquisite natural beauty facing the Bhagirathi river. The river originates from a glacier called *Gaumukh,* almost 18 kilometres away from Dham. It is one of the oldest rivers in India and holds a special and sacred place in the heart and soul of the Hindus.

Kedarnath, situated in the Rudraprayag district of Uttarakhand is the most far flung amongst the Char Dham heritage sites. Located at a height of nearly 3500 metres above the sea level, the Kedarnath temple is covered in snow throughout the year. The spirituality of the place, the ecstatic experience of seeking the blessings of Lord Shiva in the lap of nature, the snow-capped mountains and the peerless beauty of the temple combine to produce an absolutely fulfilling experience for the pilgrim. Chanting of Vedic hymns and extensive religious rituals are a part and parcel of the functioning of the Shiva temple. The tradition of carrying the idol down to a village called Ukhimath during the winter season is celebrated like a festival.

Badrinath or Badrinarayan Temple is the most visited temple of India. The temple is located in the Chamoli district of Uttarakhand alongside Alakhnanda river. It has got its name from the 'Badri tree' under which Lord Vishnu was believed to have meditated, oblivious of the extreme weather conditions of the place. The temple has a glorious historic significance as its name is mentioned in ancient religious texts like Vishnu Purana and Skanda Purana; also it is deified in one of the earliest texts composed by Tamil saints called the Divya Prabandhan. The festival 'Mata Murti Ka Mela' is one of the most prominent festivals celebrated at the temple with great pomp and show. It is the commemoration of the descent of river Ganga on mother Earth. It is believed that the mother of Badrinath divided the river into twelve channels for the well-being of humankind; she is therefore, venerated and remembered during the festival. The temple is of immense significance for the Hindu community as it allows them to connect with their ancestors. They offer various oblations in the temple for their ancestors with the help of a priest.

It is believed that these sites are interconnected and the journey is said to be complete when the devotee visits four of them together. Although the journey is tough, challenging and tiresome given the unfavourable weather conditions, the pilgrims find solace once they complete it. The devotees visit the Char Dham with a sense of hope that God will bring unto their fold, happiness and well-being alongwith prosperity to their families. Every year thousands of devotees undertake this pilgrimage to the Char Dham in Uttarakhand; it has also attracted foreign tourists who aspire to observe the Indian culture closely.

The Char Dham Yatra is sacred; it gives the pilgrim a new life and vision. It is a journey of the self towards the Lord and enables one to experience the sublime. Department of Posts is pleased to issue a set of four Commemorative Postage Stamps on Char Dham, Uttarakhand.

Credits:

Stamp/Sheetlet/ FDC/ Brochure/ Cancellation Cachet : Smt. Alka Sharma

Text : Ms. Anika Singh

भारतीय डाक विभाग

Department of Posts India

चार धाम, उत्तराखंड

CHAR DHAM, UTTARAKHAND

विवरणिका

BROCHURE

चार धाम, उत्तराखंड

विश्व भर में लोगों की आस्था और जीवन पद्धति पर धर्म का हमेशा से ही गहरा प्रभाव रहा है। इसी अत्यधिक धार्मिक आस्था के कारण तीर्थ यात्रा करने का संकल्प लिया जाता है। लोग अपनी भक्तिपूर्ण हठ, तीर्थ यात्रा को पूर्ण करने के लिए हज़ारों मील पैदल चलते हैं। धाम शब्द का शाब्दिक अर्थ– वह स्थान जहाँ देवता का वास हो अथवा मंदिर, देवस्थान है। उत्तराखंड में चार धाम यात्रा में चार पवित्र स्थल यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ शामिल हैं। हिंदू परंपरा के अनुसार, प्रत्येक व्यक्ति को मृत्यु के पश्चात मोक्ष एवं शांति की प्राप्ति के लिए इस पवित्र तीर्थ यात्रा को अवश्य करना चाहिए।

यमुनोत्री, जैसाकि इस नाम से ही स्पष्ट है, की व्युत्पत्ति भारत की सबसे पवित्र नदियों में से एक, यमुना से हुई है। चार धामों में से पहला धाम होने के कारण यह मान्यता है कि यमुनोत्री में पवित्र स्नान करने से भक्तों को अपने पापों से मुक्ति मिलती है, बुरे कृत्यों से छुटकारा प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त, यहाँ एक ऐतिहासिक महत्व का एक मंदिर है जो टिहरी के राजा द्वारा वर्ष 1839 में निर्मित कराया गया था। यहाँ काले संगमरमर की मूर्ति के रूप में देवी यमुना की मूर्ति है और साथ ही यमुना किनारे सफेद पत्थर में गंगा देवी की भी मूर्ति है। इस स्थान की आश्चर्यजनक विशेषताओं में से एक तीर्थयात्रियों को आकर्षित करने वाले मंदिर के निकट गर्म पानी के झरने हैं। झरने को सूर्य कुंड कहा जाता है; भक्त गर्म उबलते पानी में आलू और चावल उबालते हैं, जिसे बाद में देवी के प्रसाद के रूप में ग्रहण किया जाता है।

गंगोत्री धाम देवी गंगा को समर्पित है। वे मानवता को विनाश से बचाने के लिए स्वयं धरती पर प्रकट हुई थी, इसलिए इन्हें धैर्य और त्याग की प्रतिमूर्ति माना जाता है। गंगोत्री मंदिर भागीरथी नदी के सम्मुख अत्यन्त मनोहारी प्राकृतिक सौंदर्य और परिवेश के बीच स्थित है। इस नदी का उदगम् गौमुख नामक हिमनद से होता है जोकि धाम से लगभग 18 किलोमीटर दूर है। यह भारत की सबसे प्राचीनतम नदियों में से एक है जो हिंदुओं के हृदय और आत्मा में एक विशेष और पवित्र स्थान रखती है।

उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जिले में स्थित केदारनाथ, चार धाम धरोहर स्थलों में से सबसे दूर स्थित है। समुद्र तल से लगभग 3500 मीटर की ऊंचाई पर स्थित केदारनाथ मंदिर, पूरे साल बर्फ में ढका रहता है। इस स्थान की आध्यात्मिकता, प्रकृति की गोद में भगवान शिव का आशीर्वाद लेने का चरम सुख, बर्फ से ढकी पहाड़ियां और मंदिर की भव्य सुंदरता श्रद्धालु तीर्थयात्रियों के लिए अत्यधिक संतोष प्रदान करते हैं। वैदिक मंत्रोच्चार और व्यापक धार्मिक अनुष्ठान, शिव मंदिर के दैनिक कार्यों के अवयवभूत अंग हैं। सर्दियों के मौसम के दौरान मूर्ति को उखीमठ नामक गाँव में ले जाने की परंपरा एक त्योहार की तरह मनाई जाती है।

बद्रीनाथ या बद्रीनारायण मंदिर, भारत का सबसे अधिक देखा जाने वाला मंदिर है। यह मंदिर उत्तराखंड के चमोली जिले में अलकनंदा नदी के किनारे स्थित है। इसे इसका नाम 'बद्री वृक्ष' से मिला है और ऐसी मान्यता है कि इस बद्री वृक्ष के नीचे भगवान विष्णु ने मौसम की अत्यधिक/विषम स्थितियों से बेखबर होकर तपस्या की थी। मंदिर का गौरवपूर्ण ऐतिहासिक महत्व है, क्योंकि इसका नाम विष्णु पुराण और स्कंद पुराण जैसे प्राचीन धार्मिक ग्रंथों में वर्णित है; इसके साथ–साथ तमिल संतों द्वारा रचित सबसे पुराने ग्रंथों में से एक दिव्य प्रबंधन में इसका उल्लेख किया गया है। 'माता मूर्ति का मेला' का त्योहार सबसे प्रमुख त्योहारों में से एक है जिसे मंदिर में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। यह धरती माँ पर गंगा नदी के अवतरित होने के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। एक पौराणिक कथा के अनुसार बद्रीनाथ की माँ ने मानव जाति की भलाई के लिए नदी को बारह धाराओं में विभाजित कर दिया था, इसलिए त्योहार के दौरान श्रद्धापूर्वक उनकी पूजा की जाती है और स्मरण किया जाता है। यह मंदिर हिंदू समुदाय के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उन्हें अपने पूर्वजों से जुड़ने और उन्हें याद करने का अवसर प्रदान करता है। पूजारी के माध्यम से हिंदू समुदाय के लोग अपने पूर्वजों के लिए मंदिर में विभिन्न प्रकार के चढ़ावे चढ़ाते हैं।

ऐसी मान्यता है कि ये स्थल आपस में जुड़े हुए हैं और भक्तजनों की तीर्थ यात्रा तभी पूरी मानी जाती है जब वे इन चारों धामों की एक साथ यात्रा कर लें। हालांकि, प्रतिकूल मौसम के कारण यह यात्रा कठिन, चुनौतीपूर्ण और कष्टदायी है परंतु तीर्थयात्रियों द्वारा इस यात्रा के पूरा कर लिये जाने पर अपार संतुष्टि की अनुभूति होती है। भक्तजन चार धाम की यात्रा इस मनोकामना के साथ करते हैं कि भगवान उनकी झोलियां खुशियों से भर देंगे और उनके परिजनों को स्वास्थ्य, यश, समृद्धि और खुशहाली से भर देंगे। प्रत्येक वर्ष हजारों श्रद्धालु उत्तराखंड के चार धाम की यात्रा करते हैं। यहाँ विदेशी पर्यटक के साथ–साथ वे लोग भी बड़ी संख्या में आते हैं जो भारतीय संस्कृति को करीब से जानने की इच्छा रखते हैं।

चार धाम की यात्रा अत्यंत पावन तीर्थयात्रा है, जो श्रद्धालुओं को नया जीवन और जीवनदर्शन प्रदान करती है। यह यात्रा आत्मा के परमात्मा से साक्षात्कार की यात्रा है, जिससे मनुष्य को दिव्य अनुभूति होती है। डाक विभाग, चार धाम, उत्तराखंड पर चार स्मारक डाक–टिकटों का एक सेट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :

डाक टिकट / शीटलेट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका / विरूपण कैशे : श्रीमती अलका शर्मा

पाठ : सुश्री अनिका सिंह

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	1000 पैसे (2), 1500 पैसे (2)
Denomination	:	1000p (2), 1500p (2)
मुद्रित शीटलेट्स	:	5 प्रकार के प्रत्येक 25000
Sheetlets Printed	:	25000 each of 5 types
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at
http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, शीटलेट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, Sheetlet, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य: ₹ 5.00